वर्ल्ड लार्जेस्ट हैंडमेड कैलेंडर

ग्रीन पार्क-जालंधर। डब्ल्यू.डब्ल्यू.ई. तथा वर्ल्ड हैवी वेट चैम्पियन द ग्रेट खली को विश्व का सबसे बड़ा हाथों से बनाया हुआ कैलेंडर ग्रीन पार्क, जालंधर सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. रेखा ने भेंट किया। इस मौके पर ब्र.कु. दीपक व ब्र.कु. त्रिप्ता भी उपस्थित थे। इस कैलेंडर की ऊंचाई 8 फिट 5 इंच तथा चौड़ाई 3 फिट 4 इंच है। इस कैलेंडर द्वारा 'स्वच्छ भारत अभियान' का संदेश दिया गया है तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का 'धरती पर भगवान आ चुके हैं' यह ईश्वरीय संदेश दिया गया है। यह कैलेंडर अहमदनगर(महाराष्ट्र) के ब्र.कु. दीपक हरके ने बनाया है।

इससे पहले विश्व का सबसे बड़ा हाथों से बनाया हुआ कैलेंडर का विश्व कीर्तिमान बैंगलोर के कार्टूनिस्ट बी.व्ही. पांडूरंगाराव के नाम पर था। उन्होंने 15 जून 2013 को 4 फुट 2 इंच ऊंचाई तथा 2 फुट 6.5 इंच चौड़ाई का कैलेंडर बनाया था। यह जानकारी इस विश्वकीर्तिमान के निर्माता ब्र.कु. दीपक हरके ने दी।

रुदावल-राज.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के रुदावल पहुंचने पर अभियान लीडर्स ब्र.कु. बबिता व ब्र.कु. सोनू का स्वागत करते हुए उपप्रधान सत्यप्रकाश जी एवं ए.ई.एन. पी डब्ल्यू.डी. राकेश शर्मा।

मुंगेर-विहार। बिहार योग विश्वविद्यालय के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय योग गुरु परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मनीषा।

फाज़िलनगर-उ.प्र.। संस्कार सेंट्रल एकेडमी में नैतिक मूल्य की शिक्षा देने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. भारती, ब्र.कु. सूरज, बैरिस्टर जयसवाल, रामप्रसाद श्रीवास्तव व अन्य।

आगरा। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. गीता, विभोर भाई व श्रम कार्यालय न्यायाधिकारी सीताराम मीणा।

शुभ विचारों का प्रवाह ध्यान का पहला कदम

गतांक से आगे...

राजा ने सोचा कि जब ये माफी मांग रहा है तो मुझे भी मांगनी चाहिए। क्योंकि मेरे मन में भी कुविचार आया है, राजा ने भी उससे माफी मांगी। दोनों एक-दूसरे से माफी मांगने के बाद इस सोच में बैठे कि ये चंदन के लकड़े ने सारा खेल किया है। अभी जब तक इस चंदन के लकड़े को खत्म नहीं करेंगे तब तक ये विचार पीछा छोड़ेगा नहीं। तो क्या किया जाए? चंदन के लकड़े को कहीं अच्छे कार्य में लगायें। तो राजा ने कहा कि मेरे महल में तो सब कुछ है, किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। लेकिन ऐसा करते हैं कि महल के बाहर जो बगीचा है वहाँ एक मंदिर बनाते हैं। उस मंदिर में चंदन के लकड़े लगाते हैं जिससे खुशबू फैलती रहेगी और जो भी वहाँ आयेगा भजन-कीर्तन करता रहेगा। वातावरण कितना सुंदर बन जायेगा। खुशबू वाला इतना सुंदर वातावरण हो जायेगा। शुभ विचार आया मंदिर बनाने का और वहाँ सारे चंदन के लकड़े लगाने का।

राजा ने राजकोष से पैसे निकालकर उसको देना चाहा कि इसी पैसे की लालच में तेरे मन में कुविचार आया था ना। ये लो पैसा, तब वो व्यापारी कहता है, ये पैसा मुझे नहीं चाहिए। ऐसा करो ये पैसा राजकोष में ही जमा रहे। गरीबों के कल्याण के लिए उसका उपयोग किया जाए। भावार्थ ये है कि जब दोनों के मन में शुभ विचार आया तब दोनों का मन शांत हुआ, परेशानी खत्म हुई और वे दोनों शांति से सो सके।

जीवन में जब भी हमारा मन परेशान हो उठता है या रात-रात भर नींद नहीं आती है तो उसका कारण कहीं जड़ में कोई न कोई निगेटिव विचार पनप रहा है। उसको उसी वक्त क्लीयर कर दो, उसको वृद्धि को प्राप्त होने नहीं दो, नहीं तो ये सारी आंतरिक शक्ति को क्षीण कर देगा। जीवन में इतनी परेशानी और टेंशन बढ़ा देगा कि जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा।

इसलिए परमात्मा ने अर्जुन को कहा कि तुम अपने आप को भी आत्मा रूप में देखो। अपने ध्यान को बाह्य सभी बातों से समेट लो। नित्य शुभ भावनायें इस संसार की आत्माओं के प्रति भी प्रवाहित करो। यही ध्यान का पहला कदम है। छठवें अध्याय में ध्यान-योग की विशेषता को बतलाते हुए भगवान अष्टांग योग, उसके अभ्यास और उसकी सही विधि का स्पष्टीकरण करते हैं कि मन को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, ध्यान से परमात्मा में मन को एकाग्र कैसे करना है आदि... आदि।

पहले श्लोक से लेकर चौथे श्लोक तक कर्मयोग का विषय और योगारूढ़ पुरुष के लक्षण बताये गये हैं।

पाँचवें श्लोक से लेकर दसवें श्लोक तक आत्मोन्नति तथा मन को मित्र बनाने की प्रेरणा दी गयी है।

ग्यारहवें श्लोक से लेकर उन्नीसवें श्लोक तक ध्यान में बैठने की विधि बतायी गयी है।

बीसवें श्लोक से लेकर बत्तीसवें श्लोक तक योगयुक्त पुरुष के अनुभव और लक्षण बताये गये हैं।

तेतीसवें श्लोक से लेकर छत्तीसवें श्लोक तक मन के निग्रह का विषय स्पष्ट किया गया है।

सैतीसवें श्लोक से लेकर सैतालीसवें श्लोक तक योगभ्रष्ट पुरुष की गति का विषय और ध्यान योग की महिमा बतायी है। इस तरह भगवान ने `योगारूढ़ पुरुष' के लक्षण बताये हैं। हे अर्जुन! कर्म करते समय किसी भी प्रकार की फल की कामना न रखते हुए जो कर्म करता है तथा इंद्रिय जनित सम्पूर्ण सुख के भौतिक पदार्थों की इच्छायुक्त संकल्पों का त्याग करने वाला ही सच्चा योगी या सन्यासी है। जिसका मन वश में है और प्रसन्नचित्त होकर स्वयं को किसी उपयोगी कार्य में लगाता है, वही योगारूढ़ की अवस्था वाला है। इसलिए ऐसा योगारूढ़ पुरुष हमें बनना है। मनुष्य को आत्मोन्नति करनी चाहिए, हमेशा यह ख्याल रहना चाहिए कि मैं अपनी आत्मोन्नति कैसे करूं। आत्मा की अधोगति न होने दें क्योंकि जीवात्मा स्वयं ही स्वयं का मित्र व शत्रु होता है। - क्रमशः

नये वर्ष में नया... - पेज 2 का शेष

ख्याल आये कि विश्व को आपकी ज़रूरत है तब से आपका विकास शुरु होता है। ईश्वर हमेशा कहता है, मुझे आपकी ज़रूरत है, हर रोज़ आप अपनी नई ताज़गी से भर अपने आपको मुझे अर्पण करो, जिससे मैं आपका उपयोग कर सकूँ, और समर्थ बना सकूँ।

यह जगत बिगड़ गया है, ऐसी शिकायत हम करते हैं लेकिन उसे बिगाड़ने वाला कौन? प्रकृति ने तो सुंदर पृथ्वी का निर्माण कर मनुष्य को अर्पित कर दिया है। ईश्वर ने तो श्रेष्ठ सृजन के रूप में मनुष्य का निर्माण कर उसे जीने की स्वतंत्रता दे दी लेकिन मनुष्य की अमर्यादित स्वतंत्रता की भूख ने उसे बेचैन कर दिया है। परिणाम स्वरूप विवेक चूका और न करने जैसे कार्यों में वह उलझ गया।

जिसे जो रोल दिया गया है, उसे वह स्वीकार्य नहीं। चपरासी को उत्तम चपरासी बनना नहीं है, वह साहब बनना चाहता है। `साहब' को उत्तम साहब बनने के बजाय मंत्री बनने में रस है। मंत्री मुख्यमंत्री बनने का और मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री बनने का ख्वाब देखता है। धनवान को महाधनवान बनना है और गुरू को महागुरू बनना है। परिणाम स्वरूप वो अपने हिस्से में आये काम को न्याय दे नहीं सकता। इसलिए `कर्म की कुशलता' का साधक वह बन नहीं सकता। प्रत्येक दिन उसके लिए महत्वाकांक्षा के सागर का यात्री बनने का अवसर बने, ऐसी मनुष्य की चाहना है। मनुष्य बाहर से जागता है लेकिन अंदर से कुम्भकरण की निद्रा ने कब्ज़ा कर लिया है। परिणाम स्वरूप उनमें आत्म-जागृति नहीं आती। जॉन रस्कि ने सही कहा है कि जब मनुष्य स्वयं की मकड़जाल में उलझ जाता है तो वास्तव में मनुष्य एक छोटा सा पॉकेट बन जाता है। मनुष्य की सभी विकृतियों का मूल कारण है तृष्णा। मनुष्य तृष्णा का नकाब पहनता है, ओढ़ता है और तृष्णा का ही भोजन करता है।

नये वर्ष में नया करने के लिए बासीपने के निराकरण के पाँच उपाय–

1. हर रोज़ मन में उठती तृष्णाओं को बाहर धकेलते रहिए।
2. मनुष्य को नये रूप से और नये दृष्टिकोण से निहारते रहिए, द्वेष-विद्वेष के पूर्वाग्रह की नज़र से नहीं।
3. प्रत्येक कार्य ईश्वर द्वारा तुम्हें मिली ज़िम्मेवारियाँ हैं, ऐसा समझ कार्य को `निपटाने' का नहीं बल्कि `सम्पूर्ण करने' का संकल्प करें।
4. मेरे सम्पर्क में आज जो कोई आये वह मेरे द्वारा सुखी, शांत बन उमंग में आ जाये, ऐसा आचरण हे परमात्मा मुझे सिखाइए।
5. जीवन को जीवंत रखें, उसमें प्रेम का अथाह नीर हो। सिर्फ स्वजन ही नहीं लेकिन सर्वजनों को आपका प्रेम बिना शर्त अधिकारी बनाये।

नदवई। एस.डी.एम. शौकत अली को आत्मस्मृति का तिलक देने के पश्चात् प्रसाद व ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. पूनम व ब्र.कु. बबिता।

भिवानी-हरियाणा। आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् जिला औद्योगिक संघ के प्रधान शैलेन्द्र जैन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा।